14

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली
सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा (कक्षा बारहवीं)
परीक्षार्थी प्रवेश-पत्र के अनुसार भरें

विषय Subject : HINDI

विषय कोड Subject Code : 302

परीक्षा का दिन एवं तिथि
Day & Date of the Examination : FRIDAY 11/03/2016

उत्तर देने का माध्यम
Medium of answering the paper : HINDI

प्रश्न पत्र के ऊपर लिखे कोड को लिखें Write code No. as written on the top of the question paper	Code Number: 2/1	Set Number: ● ② ③ ④

अतिरिक्त उत्तर-पुस्तिका (ओं) की संख्या
No. of supplementary answer-book(s) used :

विकलांग व्यक्ति :
Person with Disabilities : हाँ / नहीं Yes / No — NO

किसी शारीरिक अक्षमता से प्रभावित हों तो संबंधित वर्ग में ✓ का निशान लगाएं।
If physically challenged, tick the category

B	D	H	S	C	A

B = दृष्टिहीन, D = मूक व बधिर, H = शारीरिक रूप से विकलांग, S = स्पास्टिक, C = डिस्लेक्सिक, A = ऑटिस्टिक
B = Visually Impaired, D = Hearing Impaired, H = Physically Challenged, S = Spastic, C = Dyslexic, A = Autistic

क्या लेखक – लिपिक उपलब्ध करवाया गया : हाँ / नहीं
Whether writer provided : Yes / No — NO

यदि दृष्टिहीन हैं तो उपयोग में लाए गये सॉफ्टवेयर का नाम :
If Visually challenged, name of software used : NO

*एक खाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना रिक्त छोड़ दें। यदि परीक्षार्थी का नाम 24 अक्षरों से अधिक है, तो केवल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें।
Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

कार्यालय उपयोग के लिए
Space for office use

3073351
302/03157

2

8.

क)
उ०- बात की चूड़ी मरने का अभिप्राय बात का प्रभावहीन होना। लेखक कहना कुछ और चाहता था किंतु लोगों की वाह वाही में आकर बात को पेचीदा बनाता चला गया जिससे बात की चूड़ी मर गई।

ख)
उ०- बात को कील की तरह ठोकने का तात्पर्य बात को जबरदस्ती जटिल बनाना। सहज और सरल बात को सरल तरीके से कहा जा सकता है किंतु कवि उसे जबरदस्ती भाषा के जनजाल में बाँध रहा है।

ग)
उ०- बात और भाषा परस्पर जुड़े हैं। कवि मन में उठे भावों को शब्दों के माध्यम से दूसरों तक पहुँचाता है वह अपनी बात को कहने के लिए विभिन्न शब्दों, अलंकारों, मुहावरों का प्रयोग करता है।

घ)
उ०- अगर भाषा में कसाव न हो तो हम जो बात कहना चाहते हैं वह हम उसी अर्थ

में नहीं कह पाएँगे । हम कहेंगे कुछ और सामने वाला व्यक्ति उसका
कुछ और अर्थ निकालेगा।

10.

(क)

उ0) ज्यादातर यह देखा जाता है कि कवियों को समाज से कोई लेना देना
नहीं होता वह अपनी ही दुनिया में मस्त रहते है वह अपने में ही
मग्न रहते है किंतु गोस्वामी तुलसीदास को समाज में लोगों की चिंताओं
व समस्याओं की जानकारी थी। उन्हें यह अच्छे से पता था कि
कैसे लोग पेट भरने के लिए कार्य कर रहे है व लोगों के पास आजीविका
कमाने के साधन नहीं है किसान के पास खेती के साधन नहीं है, भिखारी
को दान व भीख नहीं मिलती, नौकरीशुदा लोगों को नौकरी नहीं मिल रही
इत्यादि। इन सभी बातों से पता चलता है है कि तुलसी को अपने
समय की आर्थिक - सामाजिक समस्याओं की जानकारी थी।

ग)

उ०. शमशेर बहादुर सिंह द्वारा रचित उषा नामक कविता मे गाँव की सुबह का जीवंत चित्रण है। कवि ने अपनी कविता में भोर के समय आकाश के रंग को राख से लीपा हुआ चौके के समान बताया है, भोर के समय आकाश गहरे सलेटी रंग का होता है व सुबह के समय वातावरण मे कोई प्रदूषण नहीं होता वातावरण राख से लीपे चौके के समान एकदम पवित्र होता है। कवि ने आकाश मे मे छाई सूरज की लाली को काली सिल पर केसर लगा केसर के समान व काली सलेट पर लाल खड़िया चाक घिस देने के समान बताया है क्योंकि भोर के समय जब अंधकार पूर्ण आकाश में की किरण सूरज की किरण की रोशनी मानो ऐसी ही प्रतीत होती है। - राख से लीपा हुआ चौका, काली सिल, सलेट यह सब ग्रामीण परिवेश से ही लिए गए है। शहर के बच्चे तो इन वस्तुओं से अवगत भी नहीं होंगे।

11.
क)

उ०:- उस पुड़िया में लाहौरी नमक था। साफिया अपनी माँ समान सिख बीबी के लिए उनकी आरजू पर लाहौरी नमक को हिंदुस्तान पाकिस्तान से हिंदुस्तान ले जाना चाहती थी

किंतु नमक ले जाने पर कानूनी प्रतिबंध था व सफ़िया अपनी माँ समान
सिख बीबी के लिए यह भेंट के रूप में ले जाना चाहती थी इसके
लिए वह चोरी करने को भी तैयार थी किंतु उसने अंत में यह
नमक कस्टम अधिकारी को दिखाते हुए ले जाने का फ़ैसला किया।
पूरी कहानी नमक पर व सफ़िया के मन में द्वंद्व पर
आधारित है।

ख)
उ०- अब सफ़िया पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी को नमक की पुड़िया
दिखाते हुए सिख बीबी का लाहौर के प्रति प्रेम के बारे में
जिक्र करती है तो पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी जिनका जन्म स्थान
दिल्ली (हिंदुस्तान) है को याद आ जाती है व वह कहते है कि
'जामा मस्जिद की सीढ़ियों को मेरा सलाम कहिएगा।' वह आज भी
दिल्ली को अपना वतन मानते है।

(ग)
उ०- बाकी सब रफ़्ता रफ़्ता ठीक हो जाएगा का अभिप्राय है कि
देश की जमीन को बाँट देने से लोगों का मन नहीं बँटता अतः धीरे धीरे

अपने जन्मस्थान से सदा रहता है।

Ii) प्रेम के सामने ये कानून कुछ नहीं होता है। एक दिन ऐसा अवश्य आएगा कि सभी अपने-अपने जन्मस्थान पर रह सकेंगे।

घ)

उ०- मुहब्बत एक ऐसी चीज है जिसके जो कस्टम से इस तरह गुजर जाती है कि कानून हैरान रह जाता है। पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी सफिया व सिख बीबी दोनों की भावनाओं को अच्छे से समझ सकता था क्योंकि उसका भी जन्म स्थान दिल्ली था जिससे वह बेहद प्यार करता था उसी प्रकार अमृतसर कस्टम अधिकारी को अपने जन्मस्थान ढाका से लगाव था। इसी कारण वह सफिया की भावनाओं को समझते हुए नमक ले जाने की अनुमति दे दी।

12

ग)

उ०- जब लुट्टन पहलवान ने श्यामनगर के दंगल में शेर के बच्चे चाँद सिंह जिसे अभी तक कोई हरा नहीं पाया था उसे लुट्टन पहलवान ने मात दे दी थी जिससे राजा साहब ने खुश होकर उसे अपने राज्य का स्थायी पहलवान बना दिया व राजा

साहब ने उसके भरण - पोषण का भी पूर्ण दायित्व लिया। किंतु कुछ
समय बाद राजा साहब की मृत्यु हो गई राजा के बाद राजकुमार ने
सिंहासन सँभाला तब राजकुमार ने लुट्टन सिंह पहलवान को दरबार
से निकाल दिया। कुछ दिनों तक तो गाँव वालों ने उसके भरण - पोषण का
दायित्व लिया किंतु कुछ समय बाद जब अखाड़ा बंद हो गया तब गाँव वालों ने
दायित्व लेने से इंकार कर दिया भूख से लुट्टन के दोनों पुत्रों की मृत्यु हो
गई व कुछ समय बाद अकेले रहने पर वह स्वयं को मृत्यु को प्राप्त
हो गया। उसकी दुर्गति का एक और कारण गाँव में फैली महामारी थी।

घ)
उ०1- क धर्मवीर भारती द्वारा रचित काले मेघा पानी दे नामक अध्याय में इंदर सेना
इंद्र देवता से पानी की गुहार करती है वह लोगों से गाँव वालों से
जल दान करवा कर इंद्र देवता के समक्ष समर्पित करती है किंतु कुछ लोगों
को लड़कों का नंग - धड़ंग घूमना कीचड़ में लोटना अभद्र, गंदारपन, पिछड़ापन
लगता था जिससे वह इस टोली को मेंढक - मंडली कहते थे। लेखक भी
उन्हीं में से एक था लेखक जीजी को इंदर सेना पर पानी फेंकने से मना
करता है वह कहता है जब पानी की हमारे पास भी कमी है तो पानी की
इस तरह निर्मम बरबादी क्यों? तब जीजी उसे समझाती हैं कि ऋषि मुनियों

ने भी कहा है कि दान वह है जिसमें त्याग हो अगर हमारे पास बहुत सारा धन है और उसमें से हम कुछ देते है तो वह दान नहीं है। मैं जोशी के समर्थन में हूँ असली दान तो वह होता जिसकी हमारे पास भी कमी है और और उसमें से भी किसी को दे देना। जब हम कुछ दान करते हैं तभी तो उसके बदले में हमें कुछ मिलता है। किसान भी पाँच-छः सेर गेहूँ बीज के रूप में लगाकर ही कई मन गेहूँ प्राप्त करता है।

3) उत्तर- बाजारदर्शन नामक पाठ में पैसे की शक्ति दिखाई है वह व्यक्ति जिसके पास भरपूर पैसा है व उसका मन खाली हो तो वह बाजार के जादू की चपेट में आ जाता है और बेमतलब की वस्तुएँ का भी खरीद लेता है। अंत में जब उसे होश आता है तब पता चलता है कि ये सभी वस्तुएँ उसे आराम देने वाली नहीं बल्कि आराम में खलल डालने वाली है।

उत्तर: बाजार दर्शन नामक पाठ में लेखक के मित्र बाजार गए किंतु उन्हें यह नहीं पता था कि उन्हें क्या चाहिए? उन्हें बाजार में जो अच्छा लगा वह खरीद लिया सिर्फ और सिर्फ अपनी पर्चेजिंग पावर दिखाने के चक्कर में।

दूसरी तरफ भगत जी जो बाजार से अपने मतलब का सामान खरीदते

थे। उन्हें पैसे का कोई लोभ नहीं था।

ख) उ०- डॉ. आंबेडकर जाति प्रथा को श्रम विभाजन का रूप नहीं मानते थे उनका मानना था किसी जाति में जन्म लेना मनुष्य के अपने हाथ में नहीं है किंतु मनुष्य के प्रयत्न उसके अपने हाथ में है। एक व्यक्ति को उसकी योग्यता, क्षमता, रुचि, कौशल के अनुसार श्रम विभाजन करना चाहिए न कि उसकी
201 जाति के आधार पर। जाति के आधार पर श्रम विभाजन से कभी भी देश का विकास नहीं हो सकता। एक व्यक्ति सिर्फ अच्छी ऊँची जाति में जन्म लेकर सम्मान का हकदार बन जाता है भले ही उसके गुण ऐसे न हो या उचित नहीं। भीम राव आंबेडकर के अनुसार सभी को विकास के समान अवसर दिए जाने चाहिए फिर योग्य-अयोग्य व सम्मान की बात करनी चाहिए।

13. उ०- ऐन फ्रैंक द्वारा रचित डायरी के पन्ने नामक अध्याय में ऐन फ्रैंक मानती है कि पुरुष अपनी शारीरिक क्षमता के बल पर महिलाओं को दबाते हैं व उनका शोषण करते हैं महिलाओं को उनके अधिकारों से वंचित रखा गया है इसमें कुछ हद तक तो महिलाओं की गलती है उन्होंने कभी

इसके खिलाफ आवाज ही नहीं उठाई। ऐन यह नहीं कहती कि औरतों को बच्चे जनना बंद कर देना चाहिए क्योंकि यह प्रकृति का नियम है। एक औरतें बच्चे को जन्म देते समय युद्ध में लड़ते सैनिकों को गोली गोली के समान दर्द सहन करती है। समाज में औरतों को कमजोर माना जाता है किंतु ऐन इसे गलत ठहराती है।

आज का युग और भारत की स्थिति ऐन के आसपास की महिलाओं की स्थिति की अपेक्षा काफी अच्छी है आज महिलाओं को हर निर्णय लेने का अधिकार है वह अपना विवाह संबंधी निर्णय स्वयं लेती है वह आज पुरुषों की बराबरी कर रही है। आज हर कार्य में महिलाएँ पुरुषों से आगे है चाहे वह शिक्षा हो या कार्य आज जिस स्थान पर पुरुष नहीं पहुँच पा रहे हैं वहाँ महिलाएँ आसीन है। अतः यह कहा जा सकता है कि यहूदियों की महिलाओं की अपेक्षा भारतीय नारियों की स्थिति अच्छी है।

19. क)

उ०। सिंधु घाटी सभ्यता साधन-संपन्न थी, यहाँ जल की अच्छी व्यवस्था थी, सड़के चौड़ी व छोटी दोनों प्रकार की थी। यहाँ के लोगों को कला का ज्ञान था, वह तांबे के दर्पण, कंघी, मनके के हार, सोने के आभूषण इत्यादि बनाने में कुशल

थे। इधर सिंचाई की अच्छी व्यवस्था थी। यहाँ के भंडार गृह अनाज से भरे रहते थे। यहाँ जल निकासी की अच्छी व्यवस्था थी। आज के व्यक्ति साफ-सफाई रखते थे। सबके अपने अपने घर व स्नानगृह थे। घर छोटे-छोटे थे जिससे अधिक से अधिक लोग रह सके। इनके पास यातायात के लिए बैलगाड़ी की सुविधा थी। ये लोग अपनी वस्तुओं का निर्यात भी करते थे।

सिंधु घाटी सभ्यता साधन संपन्न तो थी किंतु यहाँ एक भी मंदिर,
201 राजाओं की समाधि देखने को नहीं मिली, नरेश के सिर पर ताज भी बहुत छोटा था। यहाँ राजा-महाराजाओं के चित्र देखने को नहीं मिले इससे हम कह सकते हैं कि यहाँ सभ्यता का आडंबर नहीं था। सिंधु घाटी सभ्यता समाजपोषित सभ्यता थी।

(ख)
उ०- यशोधर बाबू किशनदा के आदर्शों पर चलते थे उन्हें अपना पुराना रीति-रिवाज, रस्म-सहन काफी अच्छा लगता था वह संयुक्त परिवार में रहना पसंद करते थे। वह रोज मंदिर जाते थे कीर्तन करते थे। उन्हें नए जमाने की वस्तुएँ समहाऊ इंप्रापर सी प्रतीत होती थी। उन्हें निम्नलिखित चीजें समहाऊ इंप्रापर सी प्रतीत होती थी।

- सामान्य पुत्र द्वारा असामान्य वेतन प्राप्त करना।
- बेटी के द्वारा अभद्र कपड़े पहने जाना।
- सिल्वर वैडिंग की पार्टी आयोजित करना।
- बच्चों की पिता की बात न मानना।
- घर में टी.वी. फ्रिज ले आना।
- परिवार वालों की मदद न करना।

यशोधर बाबू नई संस्कृति के बिल्कुल पक्ष में नहीं थे इसलिए उनकी सभी लोगों द्वारा बदनामी की जाती थी। वह अपने संस्कारों को सर्वश्रेष्ठ मानते थे। वे कार्यालय के कर्मचारी को तीस रुपये सिल्वर वैडिंग का आयोजन करने के लिए देते हैं खुद उसमें शामिल नहीं होते। वे स्कूटर की सवारी को अच्छा नहीं मानते उन्हें अपनी बीवी की ऐसे कपड़े रहन-सहन अच्छा नहीं लगता। वे घर में आयोजित सिल्वर वैडिंग के आयोजन में शामिल न होने के हर संभव प्रयास करते हैं। एक तरफ वे फ्रिज, टी.वी. को अच्छा व सुविधाजनक व शोभा बढ़ाने वाला भी मानते हैं। वे केक काटकर अपने बच्चों का मन रखते हैं। वे दो भिन्न कालखंडों में जी रहे थे।

सेवा में,
संपादक मंडल
दैनिक जागरण
नई दिल्ली

201 विषय :- अंधविश्वास फैलाने वाले कार्यक्रमों की रोकथाम हेतु।

महोदय,
मैं आपके समाचार संगठन का ध्यान टी.वी. चैनलों द्वारा प्रसारित किए जा रहे टी.वी. पर अंधविश्वासी कार्यक्रमों की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ। आज प्राय: देखा जाए तो सभी चैनलों पर डायन, भूत, इच्छाधारी नागिन के कार्यक्रम दिखाए जा रहे हैं व अंत में यह भी नहीं बताया जाता है कि यह सब काल्पनिक है प्राय: ऐसा दर्शाया जाता है कि ये सब वास्तविक, सच्ची घटना पर आधारित है। कार्यक्रमों में औरतें साधु - बाबा अर्थात् ढोंगी बाबा से प्रार्थना करती हुई दिखाई जाती है व ढोंगी बाबा का करिश्मा भी दिखाया जाता है। ये सभी धारणाएँ असल में नहीं होती किंतु फिर बच्चे तो बच्चे परंतु बड़े भी इन्हें अपनी जिंदगी में दोहराते हैं और सच न होने पर

आज
है
है
विक, सजी
/बाबा से
करने तो
होने पर

निराश होते है। इन कार्यक्रमों की मदद से आज ढोंगी बाबा सभी लोगों को लूट रहे है। नकली भूत, डायन बनकर आए दिन घरों मे चोरी हो रही है। इन कार्यक्रमों के कारण बच्चें अकेले समय व्यतीत करते समय डरते है। डर के कारण उनकी पढाई पर बुरा असर हो रहा है।

अतः आपसे अनुरोध है कि ऐसे कार्यक्रमों की रोकथाम हेतु अपने समाचार पत्र के माध्यम से मेरा यह विचार सभी तक पहुँचाने में मेरी मदद करे जिससे संबंधित विभाग इसके विरुद्ध सख्त कार्यवाही करें।

सधन्यवाद।

भवदीया
आकांक्षा

दिनांक: 11 मार्च 2018

5,
क)
उ०- इलैक्ट्रोनिक माध्यम की विशेषता :-
i) यह श्रव्य, व दृश्य दोनों प्रकार का माध्यम है।
ii) इस माध्यम में खबरें घंटे प्रतिघंटे बदलती रहती है।

ख)
उ०- संपादक के दायित्व :-
i) लिखित समाग्री को सुरक्षित करना।
ii) लिखित समाग्री को साफ व स्वच्छ कापी करना जिससे पत्रकार को पढने में मदद मिले।

ग)
उ०- संपादकीय अपनी रीति - नीति के अनुसार किसी चर्चा पर टिप्पणी करती है जिससे समाज के सदस्य जागरूक होते है।

घ)
उ०- (i) रेडियो माध्यम की भाषा अत्यंत सरल होती है।
(ii) इसमें महत्वपूर्ण सूचनाओं को पहले व कम महत्व की सूचनाओं को बाद

में प्रसारित किया जाता है।

ङ)
उत्तर- मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ इसलिए कहा जाता है कि क्योंकि यह किसी पार्टी, समूह व समर्थन किए बिना लोगों के हित को ध्यान में रखते हैं सही व निष्पक्षता से सूचना का प्रसारण करती है।

अपठित गद्यांश

1.
क)
उत्तर- संवाद शीर्षक - संवाद की विशेषता

ख)
उत्तर- संवादहीनता से तात्पर्य संवाद न करने की इच्छा है। मौन भागीदारी व संवादहीनता दो अलग-अलग विचारधाराएँ हैं। मौन भागीदारी की इच्छा वह है जब एक श्रोता बनकर शांति से किसी की बात सुनना चाहते हैं व संवादहीनता का तात्पर्य है जब हमारे पास संवाद करने की स्थिति ही न हो।

ग)
उ०।- इसका अर्थ यह है कि जब हम किसी की बात को अच्छे से नहीं सुनते व बीच में अपना तर्क देते हैं तो न तो उसकी बात का कोई अर्थ निकलता है न हमारी बात का जिससे संवाद महत्वहीन हो जाता है।

घ)
उ०। एक दुखी व्यक्ति के संवाद का श्रोता रूप अधिक लाभकर होता है क्योंकि अगर वह वक्ता होगा तो स्वयं दुखी होने के साथ - साथ अन्य को भी दुखी कर देगा व नकारात्मक कथन बोलेगा जो उचित नहीं है इसकी जगह अगर वह श्रोता होगा तो कुछ ग्रहण करेगा व सीखेगा।

ङ)
उ०।- सुनना कौशल की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।-
i) इससे हम सभी समस्याओं को हल कर सकते हैं।
ii) सामने वाले व्यक्ति के अंदर उत्पन्न हुई भावनाओं को समझ सकते हैं।

च)
उ०।- हम संवाद की आत्मा तक शायद इसलिए नहीं पहुंच पाते क्योंकि हम सामने व्यक्ति

को सुनने व समझने की वजह बीच में अपने तर्क देते हैं जिससे उसका अर्थ महत्वहीन हो जाता है व हम अपनी बात समझा समझा पाते हैं न उसकी समझ पाते हैं।

ग) उत्तर: यहाँ राम का उदाहरण इसलिए दिया गया है क्योंकि हम किसी व्यक्ति को भी सुनना नहीं चाहते उसके विपरीत राम पक्षियों, पौधों से पूछते हैं व अंत उन्हें उनके प्रश्न का उत्तर भी मिलता है ठीक उसी प्रकार अगर हम सामने वाले व्यक्ति का कथन ध्यानपूर्वक सुनें तो कई समस्याएँ हल हो सकती हैं।

घ) उत्तर: इसका अर्थ है सभी व्यक्ति अपनी-अपनी बात सुनाना चाहते हैं किंतु किसी की बात सुनना व समझना नहीं चाहते।

सुनते
क्योंकि
दुखी
सकते हैं।
सामने व्यक्ति

क) 1.

उ०:- मानवीकरण अलंकार का प्रयोग हुआ है:-

• ~~बन्द~~ हौले हौले जाती मुझे बाँध निज माया से, • तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया

इसमें पंक्ति में कवि बगुलों की कतार को और निरखना चाहता है जिससे वह बादलों से कहता है इसे रोक कर रखो। इसमें मानवीकरण अलंकार का प्रयोग है।

ख)

उ०:- • काव्यांश में उर्दू भाषा का प्रयोग किया गया है :- हौले हौले

• काव्यांश में लय भी उपस्थित है। लय के लिए रखो को रक्खो कहा गया है।

ग)

उ०. • काव्यांश में गतिशील बिंब है :- उसे तनिक रोक ~~रख~~ रक्खो, तैरती साँझ

काव्यांश में दृश्य बिंब है :- तैरती कजरारे बादलों का दृश्य।

उ०1

निबंध

भारतीय समाज में नारी

भूतकाल में नारी :- भूतकाल में नारी की स्थिति की स्थिति काफी दयनीय थी सब सभी लोग लोग नारी को अबला और कमजोर मानते थे। उनका मानना था कि नारी घर के कार्य के अलावा और कुछ कार्य नहीं कर सकती। जिस घर में जो माँ कन्या को जन्म देती थी उसे अपमानित किया जाता था व उसे जीवन के अनिवार्य संसाधनों से वंचित रखा जाता था। कई लोग तो कन्या के जन्म के पहले ही उसे मार देते थे। पहले नारी पर पुरुषों द्वारा शासन किया जाता है उसे चारदिवारी के अंदर कैद रखा जाता था। उसे कठपुतली की तरह उपयोग किया जाता है। उसके पास अपनी राय प्रकट करने की स्वतंत्रता नहीं होती थी। भूतकाल में ज्यादातर नारी फिर पढ़ी-लिखी नहीं थी।

नारी की भूमिका :- कन्याभ्रूण हत्या करने वाले लोग शायद यह भूल जाते हैं कि नारी के बिना सृष्टि का चक्र नहीं चल सकता। नारी ही बच्चों को जन्म देती है, उसका पालन-पोषण करती, उसको पढ़ाती है इत्यादि। ईश्वर ने कुछ सोच समझकर ही तो सृष्टि पर

नारी को जन्म दिया होगा।

वर्तमान में नारी की स्थिति। आज के युग में नारी की स्थिति पहले के युग की तुलना में काफी अच्छी है आज नारी वह सभी कार्य कर रही है जो प्रायः पुरुषों द्वारा कि किए जा रहे हैं आज जिस पद पर पुरुष नहीं पहुँच पा रहे उस पद पर नारी पहुँच रही है। हर क्षेत्र में नारी पुरुष से आगे है चाहे फिर चाहे वह शिक्षा
20 का क्षेत्र हो या कार्य का। आज नारी अपने जीवन से संबंधित सभी निर्णय ले रही है। उसके साथ कोई जबरदस्ती नहीं कर सकता, वह जागरूक है वह जानती है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा।

सरकार के कदम। सरकार ने भी नारीयों के विकास के लिए कई कदम उठाए है उसने ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए है जिससे सरकार को फायदा है। सरकार ने बेटियों को मुफ्त शिक्षा प्रदान की है व सरकारी नौकरियों में आरक्षण भी प्रदान किया है।
"अतः यह कहा जा सकता है आज नारी की स्थिति काफी अच्छी है।"

आलेख

महँगाई

महँगाई आज प्रायः सभी हर व्यक्ति की समस्या है, हर व्यक्ति महँगाई के कारण पीड़ित है। आज हर चीज के दाम दुगुने-तिगुने हो गए। पहले व्यक्ति कहता था कि वह दाल-रोटी खाकर गुजारा कर लेगा किंतु आज तो वह भी नहीं कर सकता दाल के दाम अब आसमान छू रहे हैं।

महँगाई की समस्या उन व्यक्तियों द्वारा पनपती है जो अपनी आवश्यकता से अधिक समान खरीद कर अपने पास जमा करके रखते हैं जिससे बाजार में वस्तु की कमी होती है व उसकी माँग अधिक होने पर प्रायः उस वस्तु की कीमत बढ़ा दी जाती है। इससे अमीर लोगों को तो कोई फर्क नहीं पड़ता किंतु बेचारे गरीब व्यक्ति महँगाई के कारण मर जाते हैं। जमाखोरी, कालाबाजारी भी महँगाई के कारण हैं। आज महँगाई इतनी हो गई है कि सभी व्यक्ति दाने-दाने को मोहताज हो रहे हैं। महँगाई के कारण आज हम लोग पोषक तत्व

नहीं खा पा रहे है हम बासी खाना ग्रहण करते है जिससे हमारा स्वास्थ्य खराब हो रहा है। अगर एक चीज के दाम बढ़ते है तो उसके साथ-साथ कई अन्य चीजों के भी दाम बढ़ जाते हैं। आज अगर कोई गरीब व्यक्ति बीमार हो जाए तो वह अच्छा अच्छे से इलाज भी नहीं करवा सकता है क्योंकि अस्पताल इतने महँगे होते हैं कि उसकी पहुँच के बाहर होते है। महँगाई के
20 कारण आज गरीब व्यक्ति अपने बच्चों को शिक्षा के अवसर प्रदान नहीं करवा पा रहा है क्योंकि स्कूल व कॉलेज की फीस ही इतनी ज्यादा है। कई गरीब व्यक्तियों के बच्चे होशियार होते हैं भी जीवन की कई सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं। वे धनी व्यक्तियों को देखकर निराश होते हैं। महँगाई के कारण आर्थिक विभाजन बढ़ रहा है। अमीर और अमीर होता जा रहा है व गरीब और गरीब। सरकार भी महँगाई को कम करने के उचित प्रयास नहीं कर रही है। महँगाई के कारण मध्यम वर्ग व निम्न वर्ग बुरी तरह पीड़ित है।

6.

फीचर लेख

भीड़ भरी बस के अनुभव

प्रायः देखा जाए तो बसों में भीड़ ही होती है किन्तु भीड़ इतनी होती है कि पैर रखने की जगह तक नहीं होती उस भीड़ में प्रायः यह नहीं पता चलता है कौन कन्डेक्टर है व कौन सवारी कोई भी व्यक्ति इसका फायदा उठा सकता है। भीड़ भरी बसों में कई चोरियाँ हो जाती है और किसी को पता ही नहीं चलता। मैं भी आज एक बस में बैठी जिसमें काफी भीड़ थी। युवक व बदतमीज लड़के तो इसी फिराक में रहते है कि उन्हें भीड़ भरी बस मिली नहीं कि उसमें चढ़ जाओ व गलत काम करो और उस काम की ओर इशारा करे तो कह दो गलती से हो गया पीछे से धक्का आया था तो उसमें मेरी क्या गलती। प्रायः बसवाले इतनी अधिक सवारियों को बैठा लेते है जितनी की उसमें जगह भी नहीं होती कुछ लोग खड़े रहते है कुछ लोग बस के ऊपर बैठते है जिससे संतुलन बिगड़ता है व फिर दुर्घटना होती है और कई लोगों की जानें जाती है। मैं जिस बस में बैठी थी वह सबसे ~~अराम~~ आराम

से धीरे धीरे चल रही थी कि मुझे आधे घंटे का सफर तय करने में दो घंटे लगे क्योंकि उसने इतनी अधिक सवारियाँ जो बैठा ली थी। भीड़ भरी बसों में कोई पता नहीं कब किसी का सामान ले जाए पता ही नहीं चलता है बाद में पता चलता है जबतक तो काफी देर हो जाती है। ऐसी बसों में बीड़ी की बदबू से कई लोगों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है वह किसी की बिमारी से किसी को हानि भी पहुँच सकती है। भीड़ भरी बसों के शोर से दिमाग में दर्द उत्पन्न हो जाता है। भीड़ भरी बसों का अनुभव काफी खराब व दयनीय होता है। जो व्यक्ति एक बार भीड़ भरी बसों में बैठ जाए वह दोबारा से किसी मजबूरी के बिना मुश्किल ही है वापस आकर उस में बैठना। सरकार ने कई इसके विरुद्ध कई कदम उठाए हैं किंतु बस के चालकों द्वारा इसका पालन नहीं किया जाता। इस समस्या को हल करने के लिए हमें सजग बनना होगा जब हम सब सोच ले कि भीड़ भरी बसों में नहीं चढ़ना है तो यह समस्या स्वतः हल हो जाएगी।

अपठित पद्यांश

क) उ. रसवंती एक झील है वह क्योंकि कई दिनों से वर्षा नहीं हुई है।

ख) उ. पहले वह काफी सुंदर, सुहावनी, मन को मोह लेने वाली, पानी से लबालब होगी। चारों तरफ प्राकृतिक सुंदरता होगी।

ग) उ. सूखे के कारण पेड़ों के पत्ते झड़ गए अब सिर्फ डाल ही डाल बची है जिससे इसे कंकाल कहा गया है। चिड़ियों को पछतावा है कि वह हरियाली को खो रही है।

घ) उ. भ्रष्टजन सूखी मिट्टी को बेचकर व बचे हुए अवशेषों को बेचकर लाभ कमाते है।

ङ) उ. पहले जब प्राकृतिक सुंदरता व हरियाली व नदियों में पानी था तो स्त्रियाँ घाटों से पानी के घड़े लेकर लौटती थी किंतु आज स्थिति बिल्कुल विपरीत है।